प्रेस विज्ञप्ति

आज ACBICON-2017 सम्मेलन के 3 दिन डॉ0 सुचेता डॉन्डेकर, सेठ जी0एस0 मेडिकल कॉलेज एवं के0एल0 अस्पताल द्वारा आइ0आइ0टी0, मुम्बई के छात्रों द्वारा विकसीत किये गये एक डिवाईस प्वाइंट ऑफ केयर टेस्टिंग के बारे में जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने बताया की उपरोक्त उपकरण की मदद से हमारे द्वारा अस्पताल के बाहर शहर के दूर–दराज के इलाकों की 428 गर्भवती महिलाओं का परीक्षण किया गया जिसमें उनके हिमोग्लोबिन, एवं रक्त में शर्करा तथा उच्च रक्तचाप की जांच की गई। इस उपकरण द्वारा यह सारी जांचे तुरन्त कर मरीजो को तुरन्त इसका रिपोर्ट भी मुहैया करा दिया जाता है तथा पहले की तरह मरीजो के सैम्पल को लैब तक ले जाने की जरूरत भी नही पड़ती है। पहले शहर से दूर–दराज के क्षेत्र की ज्यादा तर महिलाएं या ऐसे रिमोट एरिया की महिलाएं जो गर्भावस्था के दौरान अपना जांच करवाने काफी लेट (आठवें महिने मे) जाती थी, उनका भी इस उपकरण की मदद से जांच कर यह पता लगाया जा सकता है कि वो हाई रिस्क प्रेग्नेंसी में है या नही। उपरोक्त परीक्षण में यह पता चला की करीब 50 से 55 प्रतिशत महिलाएं हाई रिस्क प्रेग्नेंसी मे होती है जबकि पहले यह माना जाता था की 20 से 25 प्रतिशत महिलाएं ही हाई रिस्क प्रेग्नेंसी की होती है। डॉ0 सुचेता ने बताया भविष्य में ड्रोन के माध्यम से सैम्पल को पैथोलॉजी तक ले जाने के बारे मे भी सोचा जा रहा है। भविष्य में किसी भी जांच में स्मार्ट फोन एप उपयोग के उपर शोध चल रहा है।

डॉ0 मोहम्मद कलीम अहमद, बायोकेमिस्ट्री विभग के0जी0एम0यू0 ने बताया कि विभाग में जींस के डिफेक्ट का जांच भी जीसीएमएस मशीन द्वारा किये जाने की तैयारी चल रही है। इससे गर्भवती महिलाओं के अनुवांशिक विकृतियों की जांच की जायेगी यह जांच प्री नेटल एवं प्री न्यूनेटल दोनो प्रकार की होगी जिससे हम पैदा होने वाले बच्चे या नवजातों में यह पता कर सकेंगे की आगे चलकर उस में कौन सी बीमारी होगी। डॉ0 कलीम ने बताया कि माइक्रो आर0एन0ए0 की रियल टाईम पीसीआर से एक्सप्रेसन चेक कर हम यह पता कर सकते है कि यूरिनल कैंसर, प्रोस्टेट के कैंसर में जो हम हार्मोन थेरेपी दे रहे है वो कार्य कर रही है कि नही या कितने समय तक कार्य करेगी तथा किन मरीजो को हार्मोन थेरेपी देनी है। डॉ0 कलीम ने यह भी बताया कि विभाग की फाइटो केमेस्ट्री की प्रयोगशाला में विभिन्न पौधों के एंटी कैंसर कम्पाउण्ड पर भी शोध चल रहा है।

केपटाउन, अफ्रिका से आए डॉ0 राजीव इरैसमस, द्वारा एडवांस ग्लाईकेशन एण्ड प्रोडक्ट्स (AGES)की जानकारी देते हुए बताया कि ज्यादा सुगर या फ्रुक्टोज या ज्यादा उच्च ताप पर पकाएं और तले भोज्य पदार्थो मे ग्लाईकेशन का उच्च दर होता है जिससे इनका एजेस भी ज्यादा होता है ये खाद्य पदार्थ पहले से उपस्थित प्रोटीन से रिएक्ट करने लगते है। डॉ0 राजीव ने फलो के जूस से मिलने वाले फ्रुक्टोज के विषय में बताते हुए कहा कि यह इंसूलिन के सिक्रेशन को प्रभावित करता है। एडवांस ग्लाइकेशन एण्ड प्रोडक्ट शरीर के सेल्स, नर्व, हार्ट, त्वचा आदि में इकठ्ठा होने लगते है और शरीर की विभिन्न क्रियाओं को प्रभावित करने लगते है जैसे ब्लड को फिल्टर करना अदि। सुगर आसानी से शरीर में अवशोशित हो जाता हैं, इसका रेट ऑफ ग्लाईकेशन ज्यादा होता हैं इसलिए ऐसा

सुगर लेना चाहिए जिसका रेट ऑफ ग्लाईकेशन कम हो। फलों के जूस का कम सेवन करना चाहिए, तलाभूना, एवं फैटी खाद्य पदार्थ का सेवन कम करना चाहिए।

कार्यक्रम के समापन समारोह में डॉ0 रजनीश दुबे, प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा कार्यक्रम के आयोजको को सम्मेलन के सफल आयोजन पर बधाई दी गई। डॉ0 दुबे ने दो महत्वपूर्ण समस्याओं को संबंध में बोलते हुए कहा कि वायु प्रदुषण आज की सबसे बड़ी समस्या बन गई है। इस समय तो इसकी वजह से इमरजेंसी जैसे हॉलात बन गये है। विश्व में 1.8 मीलियन लोग प्रदुषण की वजह से अपना जान गवा रहे है। इसको नियंत्रीत करने की सबसे ज्यादा जरूरत हैं। इसमें किसानो द्वारा खेतों मे जलाए जाने वाले पुआली और भी ज्यादा भयावह योगदान दे रही है। भुखमरी दुसरी बड़ी समस्या है भारत आज भी विश्व की हंगर इंडेक्स में 100 नम्बर पर है, इसमे भी सुधार की बहुत जरूरत है। पिछले 15 सॉलों में हम इसमे ज्यादा सुधार नही कर पाएं है। के0जी0एम0यू0 का नाम चिकित्सा संस्थानों मे बड़े ही गर्व से लिया जाता है इसलिए के0जी0एम0यू0 और अन्य दूसरे चिकित्सा संस्थानों को जेनटिक्स बीमारियों को खत्म करने की नई विधियों के पर शोध करना चाहिए। हमे विभिन्न बीमारियों की जांचो के लिए कई तरह की लैब और मशीनों की जरूरत है जिनकी कीमत भी बहुत ज्यादा है ऐसे मे हमे पीपीपी मॉडल के उपर भी ध्यान देने की जरूरत हो जिससे कम किमत मे मरीजो को विभिन्न प्रकार की मेडिकल सुविधाओं को उपलब्ध कराया जा सके। हमे चिकित्सा संस्थानों के स्टैण्डर को स्थापित करने के लिए नेशनल एक्रिडेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल के मानको पर खरा उतरना चाहिए।
कार्यक्रम में चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि बायोकेमेस्ट्री विभाग प्रो0 अब्बास अली मेहंदी के नेतृत्व में काफी तरक्की किया है। प्रो0 मेहंदी द्वारा विभाग के उत्तरोत्तर विकास के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है। बायोकेमिस्ट्री विभाग में लेड की विषाक्तता आदि के लिए नेशनल रिसर्च सेण्टर की स्थापना प्रो0 मेंहदी के अथक प्रयासों का ही देन है जहां विश्व के विभिन्न देशें से शोधार्थि आकर शोध कर रहे है। केजीएमयू की बायोकेमिस्ट्री की लैबों को एन0ए0बी0एल की मान्यता दिए जाने के लिए प्रक्रिया चल रही है जिसमें एनएबीएल की टीम द्वारा बायोकेमिस्ट्री की लैबों, कलेक्शन सेंटरों का दौरा किया जा चुका है।